ताज़ियादारी से मुताल्लिक़ मज़ीद
मालूमात के लिए राब्ता क़ायम करें
09793347086
08175068786
अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील
हैदरी मदारी
ताज़ियादारी और सिलसिलए आलिया मदारिया की तफ़सीली जानकारी के लिए लाग आन करें
www.qutbulmadar.org
MADAR ISHAT GHAR MAKANPUR SHARIF
Mobile:8090273226/Email:amir.makanpuri@gmail.com


ताज़ियादारी
जाएज़ है
जवाज़े ताज़ियादारी इनआमे फ़ज़्ले बारी
तालीफ़
अल्हाज मुफ़्ती अश्शाह अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी
दारुल इफ़्ता, जामिआ मदारुल उलूम मदीनतुल औलिया,
दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर (यू०पी०)
09793347086, 08175068786
नाशिर
मदार बुक डिपो दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़

# ताज़ियादारी जाएज़ है

## जवाज़े ताज़ियादारी इनआमे फ़ज़्ले बारी

तालीफ़

**अल्हाज मुफ़्ती अ९९ाह अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी**

दारुल इफ़्ता, जामिआ मदारुल उलूम मदीनतुल औलिया ,

दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़, कानपुर नगर (यू0पी0)

09793347086

08175068786

नाशिर

मदार बुक डिपो दारुन्नूर मकनपुर शरीफ़

**Rs 25/-**

| | |
|---|---|
| नाम किताब | ताज़िया दारी जाएज़ है |
| मुसन्निफ़ | अल्हाज अश्शाह मुफ़्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी अल मदारी मो० न० 9793347086 |
| प्रूफ़ रीडिंग | वलीअहद ख़ानक़ाहे मदारिया मौलाना सैयद ज़फ़र मुजीब मदारी |
| खुश नवीस | फ़ैज़ ग्राफ़िक्स मकनपुर शरीफ़ |
| मतबा | मदार इशाअत घर मकनपुर शरीफ़ |
| नाशिर | मदार बुक डिपो मकनपुर शरीफ़ |
| सन् इशाअत | 2014 ई० मुताबिक़ 1436 हिजरी |
| बारे पंजुम | 2000 |
| क़ीमत | **25/—रु0** |

शाया करने वाले:—

मुहम्मद सुलेमान जीलानी बर्रा हरी मस्जिद कानपुर नगर

वल्द- मरहूम हाजी दिलावर अली शाह

मरहूमा हज्जिन बानो बेगम

161–A–4 हरी मस्जिद

बर्रा बाईपास रोड - कानपुर नगर

**9889978480**

मुन्ना साईकिल वाले

व आशिक़ाने इमाम हुसैन पैगी कमेटी गंगा गंज पनकी

कानपुर नगर

# ताइदात उलमा-ए किराम व मशाइख़े इज़्ज़ाम

पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा डा० सैयद मोहम्मद मरग़ूब आलम जाफ़री मदारी मकनपुर शरीफ़ फ़ातहे मुनाज़रए अजमेर
पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा सैयद नूरुल अख़ियार साहब मदारी
पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा मौलाना डा० अल्हाज सैयद मुक़तिदा हुसैन जाफ़री मकनपुर शरीफ़
पीरे तरीक़त हज़रत मौलाना सैयद इख़्तियार अहमद जाफ़री मदारी बहेड़ी
पीरे तरीक़त हज़रत मौलाना सैयद अज़हर अली वक़ारी मदारी
पीरे तरीक़त हज़रत सैयद बदरुद्दुजा "तमन्ना" मियाँ जाफ़री मदारी
हज़रत अल्लामा नस्तइन ख़ाँ मदारी
निस्तौली क़न्नौज
हज़रत मौलाना नौशाद आलम मदारी इमाम व ख़तीब
पनकी जामा मस्जिद कानपुर नगर
हज़रत मौलाना अल्लामा ख़लीक़ अहमद साहब मदारी
बहेड़ी बरेली
हज़रत पीरे तरीक़त सूफ़ी जलालुद्दीन साहब मदारी
कुर्ला मुम्बई
हज़रत अल्लामा मौलाना क़ैसर रज़ा हनफ़ी मदारी
झहरावॅ - सिद्धार्थ नगर
ख़लीफ़ा अबुल अनवार हज़रत सूफ़ी आशिक़ अली मदारी मुम्बई व हज़रत मक़सूद अली मदारी कुर्ला गुलाब शाह स्टेट

क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरअ मतीन मसाइले ज़ैल में :

› दस मुहर्रम के मौक़े पर यादगारे हुसैन ﷺ के तअल्लुक़ से जो ताज़िया बनाया जाता है और उनकी याद मनाई जाती है यह कैसा है ?

› ताज़िया की कोई शक्ल मुतइयन नहीं है और न रस्मो रिवाज मुतइयन है तो क्या उन सब के तअल्लुक़ से एक ही हुक्म है या मुख़्तलिफ़ ?

› ताज़िया बनाकर बाज़ जगहों पर घुमाया भी जाता है ताकि ख़्वातीन ज़्यारत कर लें । इस के लिये क्या शरई हुक्म है ?

› क्या कोई ऐसी सूरत है कि इमाम हुसैन ﷺ की याद में दस मुहर्रम को हम उनके रौज़ह की शक्ल या कोई और शक्ल बना सकते हैं जिस तरह हम 12 रबीउलअव्वल शरीफ़ में गुम्बदे ख़ज़रा बनाकर घुमाते हैं ?

› क्या नफ़से ताज़िया में कोई क़बाहत है ?

अलमुसतफ़्ती

सैयद अली अशरफ़
कछोछा शरीफ़ अम्बेडकर नगर (यू०पी०)

## الحمدلا هله و الصلواة علیٰ اهلها اما بعد

# जवाब

## महबूबाने खुदा की पैरवी करनी चाहिए

1—मज़हबे इस्लाम में यादगार की अहमियत और आसार का एहतराम असहाबे अक़ीदत व मुहब्बत को रोज़े अव्वल से सिखाया गया है।उश्शाक़े बारगाहे नबुव्वत की एक एक अदा व अन्दाज़ हमारे लिए मिशअले राह और नमूनए अमल है। अल्लाह पाक का इरशादे मुबारक है "واتبع سبیل من اناب الیَّ" (तर्जुमा)और पैरवी कर तू रास्ते की उसके जो पहुँच गया मुझ तक " इस इरशादे मुबारक से हमें पैग़ाम दिया जारहा है कि महबूबाने बारगाहे इलाह और ख़ासाने खुदा की पैरवी और मुताबेयत में ही अल्लाह और उसके रसूल की ख़ुशनुदी है और हमारी कामयाबी शआइरुल्लाह इस मुक़ाम पर सब से पहले शआयर व आसार को समझना ज़रूरी है ताकि किसी की यादगार मनाने में हमें जादये शरीअत पर गामज़न रहने की हलावत भी मिलती रहे जिन चीज़ों से अल्लाह तआला या रसूलल्लाह ﷺ या ख़ासाने खुदा की याद ताज़ा होती है क़ुरआने पाक में इनको शआयरुल्लाह,आयातुल्लाह यानी अल्लाह की निशानी क़रार दिया है चुनान्चे इरशादे बारी तआला है "اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَۃَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰہِ" (तर्जुमा) बेशक सफ़ा और मरवा (पहाड़ियॉ)अल्लाह की निशानियों से हैं"शआयरुल्लाह की तफ़्सीर करते हुए हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अपनी तफ़्सीर ख़ज़ायनुल इरफ़ान में तहरीर फ़रमाते हैं "शआयरुल्लाह से दीन के आलाम यानी निशानियॉ मुराद हैं ख़्वाह वह मकानात हों जैसे काबा, अरफ़ात, मुज़दलफ़ा, रमी ए जिमार ,सफ़ा,मरवा,मिना,मसाजिद या अज़मिनह जैसे रमज़ान, अशहरुल हराम (यानी ज़ीक़ादह, ज़िलहज्जह, मुहर्रम और रजब) ईदुल फ़ित्र व अज़हा जुमा व अय्यामे तशरीक़ या दूसरे अलामात जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े ईदैन, ख़त्ना यह सब शआयरेदीन हैं ।

**क़ुरबानी का जानवर अल्लाह तआला की निशानी है :** क़ुरबानी के जानवरों को अल्लाह तआला यादगारे ज़बीहउल्लाह होने की वजह से अपनी निशानी क़रार देता है फ़रमाने रब्बे ज़ीशान है- .
''وَالْبُدْنَ جَعَلْنَا ها لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ (तर्जुमा) यानी और हमने क़ुरबानी के जानवर तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों से कर दिये।(हज आयत 26)

वह पत्थर जिस से पैग़म्बर इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की याद आती है उसे अल्लाह ﷻ अपनी आयत क़रार दे रहा है ''فيه آيات بيّنات مقام ابراهيم. (आले इमरान आयत 97) इसमें खुली निशानियाँ हैं मुक़ामे इब्राहीम यानी वह पत्थर जिस पर हज़रत इब्राहीम عليه السلام काबए मुअज़्ज़मा की तामीर के वक़्त खड़े होते थे ग़रज़ यह कि जिस से अल्लाह या अल्लाह वालों की याद आये वह अल्लाह तआला की निशानी है । .

**अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करना चाहिये** और अल्लाह तआला की निशानियों की ताज़ीमो तौक़ीर बजा लाने का हुक्म अल्लाह पाक की तरफ़ से आया है और इस ताज़ीमो तौक़ीर बजा लाने को ''दिल का तक़वा'' कहा गया है चुनान्चे अल्लाह पाक का इरशाद है- .
''مَنْ يُّعَظِّمْ شَعَائِرَ اللهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْب और जो अल्लाह की निशानियों की ताज़ीम करे तो बेशक यह दिलों का तक़वा है। .

इमामे इश्क़ो मुहब्बत हज़रत क़ाज़ी अयाज़ मालिकी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि'' इन मुक़द्दस मुक़ामात की इज़्ज़तो हुरमत जहाँ वहीए इलाही आई और नुज़ूले क़ुरआन की सआदत हासिल हुई या जिन मुक़ामात पर जनाबे जिब्रील व मीकाईल आते रहे या दूसरे मुअज़्ज़ज़ फ़रिश्ते उतरते और अपनी मनाज़िल की जानिब जाते रहे या वह मैदान जहाँ तस्बीह व तक़दीस की सदायें गूँजती रही हैं जहाँ सैयदुल अम्बिया عليه السلام ने औक़ाते अज़ीज़ बसर फ़रमाए या जहाँ से सुन्नते नबवी व इस्लाम की तबलीग़ो इशाअत हुई । वो मसाजिदो मकान जहाँ वहदानियत व इस्लाम के दर्स दिये गये या दर्सो तक़दीस के गवाह उस मुक़ाम के दरो बाम हुए या वो मुक़ाम जहाँ सैयदुर्रसुल ने क़याम

फ़रमाया वो मनाज़िलो मुक़ामात जहॉं से नबुव्वत के चश्मे जारी हुए और फ़ैज़ाने रिसालत ने तारीकी को नूर में बदला वह मुक़ाम जिसको सरकारे दो आलम ﷺ के जसदे मुबारकके लम्स की सआदत हासिल हुई और वह जगह जहॉं सरवरे आलम आज भी महवे इस्तिराहत हैं।उन मुक़ामात की आज भी इ़ज़्ज़तो तौक़ीर लाज़िम है और उन मुक़द्दस मुक़ामात की हवायें सूँघी जानी ज़रूरी हैं इन मुक़ामात के दरो बाम की तक़बील व बोसा क़ल्बो रूह का सरमायए हयात है : .

يادار خيرالمرسلين ومن به    هدى الانام و خص بالاٰ يات
عندى لا جلك لوعه وصبابة    تشوق متوّقد الجمر ات
وعلى عهدان ملأ ت بجها جرى    من تلكم الجذ رات والعرصات
لا غفرن مصون شئى بينها    من كثرة التقبيل و الرشفات
لولا العوارى و الاعادى زرتها    ابدا و لو محبا على الوجنات

यानी ऐ सैय्यदुल मुरसलीन के काशानए अक़्दस और आप से मन्सूब चीज़ो जिन से लोगों ने हिदायत हासिल की और मोजिज़ात जो उन पर वारिद हुए मेरे पास तुम्हारे लिए सोज़िशे इश्क़ और ऐसा वालेहाना जज़बए शौक़ है जिस से चिंगारियॉं भी रौशन हैं।ख़ुदा की क़सम मेरा जज़्बा ये है कि मैं उन मैदानों या दीवारों को अपनी ऑंखों में समोदूँ मै उन मुक़ामात को इस कसरत से बोसे दूँ जिस से मेरी सियाह दाढ़ी तक ख़ाक आलूद हो जाए । अगर मवाक़े मयस्सर होते और मवानेअ सद्देराह न होते तौ मैं हमेशा उन मुक़ामात की ज़्यारत करता बावुजूद ये कि मेरे रुख़्सार गर्द आलूद हो जाते लेकिन अनक़रीब मैं उन मकानों और हुजरों के रहने वालों पर सलातो सलाम के तोहफ़े पेश करूँगा। जो मुश्क से ख़ुश्बू की लपटें मारती होंगी और जिसे सुब्हो शाम ढॉक लेंगे । उनको पाकीज़ा दुरूद और ज़्यादा सलाम बरकात से मख़सूस करती हैं ।(शिफ़ा शरीफ़ जिल्द 2 सफ़ा 113–114)

**सहाबए किराम का मामूल** :इमामे इश्क़ो मुहब्बत हज़रत क़ाज़ी अयाज़ رضي الله عنه ने आसारो तबर्रुकात और यादगारो शआयर के अदबो एहतराम और इ़ज़्ज़तो तौक़ीर का जो दर्स दिया है बेऐनेही यही सहाबा व ताबईन के

मामूलात हैं और सल्फ़े स्वालिहीन का तरीक़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ का मामूल था कि वह बिस्तरे नबवी की उस जगह को जहाँ हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हुआ करते थे अपने हाथ से मस फ़रमाते छूते थे फिर उस हाथ को अपने चेहरे पर मलते थे ।

(शिफ़ा शरीफ़ जिल्द 2 सफ़ा 110)

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल क़ारी से मरवी है-

''هو يضع يده على مقعد النبى صلى الله عليه وسلم من المنبر ثم يضعها علىٰ وجهه''

कि मैंने इब्ने उमर ﷺको देखा आप मिम्बर के उस मुक़ाम पर हाथ फेरते जहाँ रसूले करीम ﷺ बैठते थे फिर उस हाथ को अपने चेहरे पर मल लेते ।

(अश्शरहुलकबीर 3/495बहवाला शिफ़ाउलफ़वाद उर्दू अश्शेख़ मुहम्मद अलवी मालिकी)

**आसारो शेआर का एहतराम** : यह जज़्बए मुहब्बत और हुस्ने अक़ीदत ही बहुत सारे अशकाल के लिए हल्लुलमुश्किलात है और शरीअते ताहिरा से पर्दा उठा कर हक़ीक़ते शरीअत तक पहुँचा देता है सहीफ़ए मुहब्बत में निस्बतों का एहतराम सिखाया जाता है । कहते हैं कि निस्बत से शै मुम्ताज़ हो जाती है चुनान्चे इस का अन्दाज़ा उश्शाक़े रसूल की अदाओं से लगाया जा सकता है। हज़रत इब्ने सीरीन ﷺ फ़रमाते हैं, अगर मेरे पास महबूब ﷺ का एक बाल भी होता तो वह मुझे दुनिया व माफ़िहा से ज़्यादा प्यारा होता । (बुख़ारी शरीफ़)

असहाबे रसूल इस मूए मुबारक के हुसूल के लिए हुज़ूर नबी करीम ﷺ के गिर्दा गिर्द तवाफ़ करते थे और एक भी मूए पाक सरे मुक़द्दस से जुदा होता सहाबए किराम उसे अपने हाथों पर ले लेते चुनान्चे हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है-

"لقد رايت رسول الله ﷺ والحلاق يحلقه واطاف به اصحابه فما يريدون ان تقع شعرة الا فى يد رجل"

यानी मैंने रसूलल्लाह ﷺ को देखा कि हज्जाम आपके बाल तराश रहा था और आपके सहाबा आपके इर्द गिर्द तवाफ़ फ़रमा रहे थे उनकी चाहत यह थी कि आप का हर बाल ज़मीन पर गिरने के बजाए उनमें से किसी के

हाथ पर गिरे।(मुस्लिम शरीफ़ किताबुल फ़जाइल)

सहाबए किराम आप ﷺ के वुजू के ग़ुसाले के लिये एक दूसरे पर गिर गिर जाते कि किसी सूरत हुज़ूर का ग़ुसाला मयस्सर हो जाए।अगर किसी को एक क़तरा भी मयस्सर नहीं होता तो वह उस सहाबी के हाथ पर अपना हाथ मल लेते ताकि तरी की कुछ निस्बत ही हासिल हो जाए । (बुख़ारी शरीफ़)

ये अस्हाबे रसूल हैं, ये अहले मुहब्बत हैं और मुहब्बत को दलीलो हुज्जत की ज़रूरत नहीं पड़ती यहाँ तो ऐसा मुआमला है कि .

बे ख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महवे तमाशाए लबे बाम अभी

यह तो सरकारे इश्क़ो मुहब्बत के ग़ुसाले पाक और मूए पाक हैं । शैदायाने मुस्तफ़ा ﷺ तो आपका बोल मुबारक और ख़ूने मुक़द्दस भी ज़मीन पर नहीं गिरने देते बल्कि अदबो एहतराम और शौक़े मुहब्बत में उसे भी नोशे जान फ़रमा लिया करते थे । (शिफ़ा शरीफ़)

**निस्बत का मुक़ाम** : मुक़ामे इब्राहीम की ज़्यारत करना और हजरे अस्वद को चूमना इसी निस्बतो अक़ीदत की जलवा सामानी है। बाबे काबा और हतीम के होते हुए मुक़ामें इब्राहीम को मुसल्ला बनाना और हजरे अस्वद को चूमना तो अक़्लो ख़िरद भी तस्लीम करते हैं कि उसे बराहेरास्त निस्बते रसूल मयस्सर है लेकिन निस्बत का यह अन्दाज़ कितना अनोखा और निराला है कि अगर वहाँ तक हाथ या मुँह की रसाई न हो सके तो किसी लकड़ी या उस जैसी चीज़ को संगे असवद से छुआ कर उस लकड़ी या उस जैसी चीज़ को चूमा जाए अगर लकड़ी या उस जैसी किसी चीज़ की भी वहाँ तक रसाई मुम्किन न हो तो संगे असवद की तरफ़ अपना हाथ करके खुद अपना ही हाथ चूम लिया जाए और यह तसव्वुर कर लिया जाए कि गोया संगे असवद को ही चूमा है । .

**निस्बत का मुक़ाम** : मुक़ामे इब्राहीम की ज़्यारत करना और हजरे अस्वद को चूमना इसी निस्बतो अक़ीदत की जलवा सामानी है । बाबे काबा और हतीम के

होते हुए मुक़ामें इब्राहीम को मुसल्ला बनाना और हजरे अस्वद को चूमना तो अक़्लो ख़िरद भी तस्लीम करते हैं कि उसे बराहे रास्त निस्बते रसूल मयस्सर है लेकिन निस्बत का यह अन्दाज़ कितना अनोखा और निराला है कि अगर वहॉं तक हाथ या मुँह की रसाई न हो सके तो किसी लकड़ी या उस जैसी चीज़ को संगे असवद से छुआ कर उस लकड़ी या उस जैसी चीज़ को चूमा जाए अगर लकड़ी या उस जैसी किसी चीज़ की भी वहॉं तक रसाई मुम्किन न हो तो संगे असवद की तरफ़ अपना हाथ करके खुद अपना ही हाथ चूम लिया जाए और यह तसव्वुर कर लिया जाए कि गोया संगे असवद को ही चूमा है।" निस्बती होने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि जिस से निस्बत दी जा रही है उस से बराहे रास्त बिला वास्ता हाथ मस हो "मौलाना अहमद रज़ा ख़ॉं साहब फ़ाज़िले बरेलवी तहरीर करते हैं"और हाथ न पहुँचे तो लकड़ी से संगे असवद मुबारक को छूकर उसे चूम लो यह भी न बन पड़े तो हाथों से उस की तरफ़ इशारा करले उसे बोसा दे। मुहम्मदुर्रसूलल्लाह ﷺ के मुँह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं यही क्या कम है।(फ़तावा रिज़विया जिल्द 4 सफ़ा 701) निस्बतों का यह तौर और अक़ीदत का यह अन्दाज़ शरअ मुतहर में तसव्वुरात की दुनिया को वुस्अत अता करके हक़ीक़ते शरीअत का लिबास इनायत करता है । हदीसे एहसान से इस तसव्वुर को मज़ीद तक़वियत मिलती है जिसमें अल्लाह के रसूल ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं "الا حسان ان تعبد الله كانك تراه ----" इबादत में एहसान यह है कि अल्लाह पाक की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसे देख रहे हो ।"كانك تراه" (क अन न क तराहु) में तसव्वुर को जो जमालो कमाल अता किया गया है वह अक़ीदत केशों पर मख़फ़ी नहीं है जब ज़ेहनो फ़िक्र में इस तरह का तसव्वुरे हक़ीक़त अपनी जलवागाह बनाता है तो ताज़िया के झरोकों से हज़रत इमाम आली मुक़ाम इमाम हुसैन शहीदे करबला की ज़्यारत नसीब होती है ।

**ताज़िया बनाना जाएज़ो मुसतहसन है** : इस लिये दस मुहर्रमुलहराम के मौक़े से यादगारे इमाम हुसैन ؓ के तआल्लुक़ से जो ताज़िया बनाया जाता है और इमामे पाक की याद मनाई जाती है न यह कि सिर्फ़ जाएज़ो मुबाह है

बल्कि महबूबे अहले सुन्नत मन्दूबे अस्हाबे अक़ीदत और मरग़ूबे शैदायाने शाहे शहादत है।ताज़िया से हुसैनियत की तश्हीर होती है और अहले सुन्नत व अहले बिदअत में ताज़िया दारी से इम्तियाज़ होता है इस लिए बिला शक्को शुबह यह अम्र मुस्तहसन है।

हज़रत इमाम इब्ने जरीर लफ़्ज़ शआयर की तफ़्सीर में लिखते हैं कि यह शईरत बर वज़्न फ़ईलत की जमा है जिसका मानी है वह अलामत जिस से किसी चीज़ की पहचान हो सके "وشعائره اللتی جعلها امارات بین الحق والباطل". यानी जिन चीज़ों से हक़ और बातिल की शिनाख़्त हो सके उनको शआयरुल्लाह कहते हैं।

**ताज़िया हक़ व बातिल में इम्तियाज़ पैदा करता है** : इस कुल्लिया के पेशे नज़र यह साबित व मुतइयन है कि ताज़िया फ़ी ज़मानेना हमारे दयार में अहले सुन्नत का शिआर बन चुका है और ताज़िया दार सिर्फ़ अहले सुन्नत में पाये जाते हैं।अहले बिदअत व शिनाअत इसे नाजाएज़ समझते हैं इल्ला माशा अल्लाह लिहाज़ा ताज़िया से हुसैनियत की पहचान होती है और यह यज़ीद पलीद को रज़ी० लिखने वालों और सैयदना इमाम हुसैन पाक ﷺ को इमाम मानने वालों के दर्मियान इम्तियाज़ पैदा करता है इस लिए इसके बनाने और निकालने में शरअन कोई क़बाहत नहीं है।

**ताज़िया यादगारे इमाम हुसैन है** :ताज़िया बनाने वाले ताज़िया बनाने के वक़्त सिर्फ़ यह नियत करते हैं कि इस यादगारे इमाम आली मुक़ाम इमाम हुसैन ﷺ को हसीन से हसीन तर बनायें और अपने हुनर का भर पूर मुज़ाहिरा करें बाज़ ताज़िया दार शबीहे रौज़ए इमाम आली मुक़ाम बनाने में माहिर होते हैं वह हू बहू नक़्शा उतार देते हैं और बाज़ इस काम में कच्चे होते हैं हू बहू वह मिसाल क़ायम नहीं कर पाते और बाज़ ऐसे भी हैं जो सिर्फ़ इमामे पाक की मुहब्बत में उनकी यादगार मनाने केलिये एक तसव्वुराती महल का नक़्शा बना कर उसी को यादगारे इमाम तसव्वुर कर लेते हैं बहर सूरत नियत महमूद है इस लिए इस में कोई हर्ज नहीं जिसतरह हजरे असवद के बोसा लेने में लकड़ी या अपना ही हाथ चूम लेने से हजरे असवद का

बोसा हक़ीक़त में नहीं होता है लेकिन शरअ मुतहर ने उसे बोसा के मुतबादिल मान लिया है ।

**मिम्बरे रसूल का एहतराम** : इसी तरह हमारे दयारो इमसार में अहले सुन्नत के मदारिस व जलसागाहों में जो स्टेज बनाया जाता है उमूमन हिन्दुओं ग़ैर मुस्लिमों और बे एहतियात लोगों के टेन्ट हाउस से सारा सामान लाया जाता है, तख़्त दरियाँ, ग़लीचे, चान्दनी और लाउडस्पीकर बाजा मशीन वग़ैरह सब दूसरों के यहाँ से आता है।ख़ुतबा हज़रात फ़रमाते हैं"मिम्बरे रसूल" से बड़ी जिम्मेदारी के साथ बोल रहा हूँ लीजिए साहब ! तख़्त दरियाँ, ग़लीचे, चान्दनी हत्ता कि कुर्सी और लाउडस्पीकर सब कुछ किसी राम सिंह या शंकर दयाल वग़ैरह के यहाँ से लाया गया है लेकिन सुन्नी उलमा फ़ुज़ला ख़ुतबा और नुक़बा फ़रमा रहे हैं कि यह मिम्बरे रसूल है,न इस मिम्बर या स्टेज पर कभी हुज़ूर रसूले करीम ने तशरीफ़ रखा न ये उनके घर की चीज़ों से बना लेकिन फिर भी मिम्बरे रसूल है। टेढ़ा हो, ऊँचा हो या छोटा हो फिर भी मिम्बरे रसूल, न कोई आलिम मना करता है कि इसे मिम्बरे रसूल कहना हराम है और न किसी मुफ़्ती साहब को ऐतराज़ है । अपना काम हो रहा है सब ठीक है तो फिर भला छोटे बड़े और ऊँचे नीचे रंग बिरंग के यादगारे इमाम हुसैन यानी ताज़िया पर क्यूँ कर किसी को ऐतराज़ है।

**किसी भी जाएज़ नक़्शे में ताज़िया बनाना जाएज़ है** : किसी पाक कपड़े के ग़िलाफ़ में क़ुरआने पाक को रखा जाए, किसी पाक लकड़ी से रेहले क़ुरआने पाक बनाया जाए और किसी शक्ल या किसी नक़्शे में क़ुरआने मजीद उस पर रखा जाएगा इसलिए वह मोहतरम है उसे चूमा भी जायेगा और सीने से भी लगाया जायेगा।यह सब महमूद व मुस्तहसन है इसी तरह ताज़िया यादगारे इमामे पाक है जवाज़ के लिए इतना काफ़ी है।शरआ शरीफ़ का एक क़ायदा कुल्लिया हैं"الاصل فی الاشیاء الاباحة". ताज़िया में जो लकड़ी जो खपच्ची, जो तांत जो धागा और जो काग़ज़ इस्तेमाल होता है वह सब इनफ़्रादी तौर पर जाएज़ो मुबाह और पाको साफ़ हैं अब जबकि वह यादगारे हुसैनी यानी ताज़िया में इकट्ठे लगा दिये गये तो नाजाएज़ क्यूँ कर हो जायेंगे। बिला शुबहा वह अब भी जाएज़ हैं

**ताज़िया घुमाना जाएज़ है** : बाज़ शहरों में ख़ानए काबा व गुम्बदे ख़ज़रा का नक़्शा बना कर ईदे मीलादुन्नबी ﷺ के मौक़े पर शहरो में जुलूसे मुहम्मदी ﷺ के आगे आगे घुमाया जाता है बाज़ शहरों में मक्का मोअज़्ज़मा के ख़ानए काबा और गुम्बदे ख़ज़रा रौज़ए मुक़द्दसा सैयदे आलम ﷺ का नक़्शा शहरों के सदर दरवाज़ों पर बनाया जाता है,आमतुल मुस्लिमीन इसकी ज़्यारत करते हैं।इस से शौकते इस्लामी का मुज़ाहिरा होता है।अपनों और बेगानों के दिलों में उनकी वक़अत बिठाई जाती है और अब तो बाज़ मोल्वियों और मुफ़्तियों के यौम के मवाक़े पर उनकी क़बरों और गुम्बदों का फ़ोटो और नक़्शा भी ख़ूब बनाया और घुमाया जा रहा है,बाज़ उलमा के मज़ारों के गुम्बद बतौर पहचान मस्जिदों और मीनारों की जगह फ़िट किये जारहे हैं ताकि वह मस्जिद या वह जगह उस जमाअत की याद दिलाए और उस की तरफ़ इशारा करे ।

**ताज़िया घुमाने से अहले बातिल के दिल पर रोब तारी होता है** : इमामुद्दुनिया वलआख़िरा हज़रत इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ की यादगार ताज़िया मुतबर्रका को जुलूसे हुसैनी के साथ गश्त कराने में कौन सा अम्र शरअई माने(रोकने वाले) है हॉ अहले बिदअत और गुमराहों के दिल इस यादगारे हुसैनी को देख कर ज़रूर जलभुन जाते हैं।ताज़िया को जुलूसे हुसैनी के साथ गश्त कराने में जहॉ अग़यार पर इस्लामी रोबो दबदबा क़ायम हो जाता है वहीं मुसलमानों के मर्दो ज़न व तिफ़्लो पीर सब के अन्दर जज़्बए हुसैनियत और हौसलए ईसारो वफ़ा क़ायम हो जाता है और ऐसा जज़्बा क़ायम करना ऐन कुरआनो सुन्नत का मंशा है । दसवीं मुहर्रमुल हराम को हज़रत इमाम आली मुक़ाम رضی اللہ عنہ के रौज़ह मुकद्दसा की मिसाल या किसी और जाएज़ शक्ल में यादगारे इमाम पाक की कोई अलामत बनाना और मिसाले गुम्बदे ख़ज़रा की तरह गलियों कूचों में घुमाना और जुलूसे हुसैनी के याथ उसकी तश्हीरो प्रचार करना बिला शक्को शुबह जाएज़ो मुस्तहसन है और अहले सुन्नत की एक दीरीना रिवायत और क़दीम मामूल है।कुरआने मुक़द्दस में अल्लाह पाक का हुक्म है "وَذَكِّرْهُمْ بِاَيَّامِ اللهِ".

और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाओ(इब्राहीम आयत 5)तफ़्सीर ख़जायनुल इरफ़ान में इसके तहत है हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़स्सिर मुरादाबादी रक़म फ़रमाते हैं''क़ामूस में है कि अय्यामुल्लाह से अल्लाह की नेअमतें मुराद हैं।हज़रत इब्ने अब्बास व उबै इब्ने काब व मुजाहिद व क़तादा ने भी अय्याम की तफ़्सीर(अल्लाह की नेअमतें)फ़रमायीं। मक़ातिल का कौल है कि अय्यामुल्लाह से वो बड़े बड़े वक़ाए मुराद हैं जो अल्लाह के अम्र से वाक़े हुए बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि अय्यामुल्लाह से वो दिन मुराद हैं जिन में अल्लाह ने अपने बन्दों पर इनआम फ़रमाया जैसे कि बनी इसराईल के लिए मन व सल्वा उतारने का दिन, हज़रते मूसा عليه السلام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन(ख़ाज़िनों मदारिक व मुफ़र्रिदाते राग़िब)इनअय्याम में सब से बड़ी नेअमत के दिन सैय्यदे आलम ﷺ की विलादत व मेअराज के दिन हैं। उनकी याद क़ायम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है बाज़ लोग मीलाद शरीफ़, मेअराज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के अय्याम की तख़्सीस में कलाम करते हैं इस आयत से नसीहत पिज़ीर होना चाहिए'' इस तफ़्सीर से यह मुतइयन हो गया कि अय्यामुल्लाह से नेअमतों के दिन, वाक़याते अज़ीमा के दिन मुराद हैं और उनकी तज़कीरो तश्हीर का हुक्म अल्लाह तआला की तरफ़ से है और उसी में दसवीं मुहर्रमुलहराम भी शामिल है पस अगर ताज़िया व जुलूसे हुसैनी के ज़रिए गलियों कूचों वाक़ए करबला की याद दिलाई जारही है और उस यादगारे हुसैनी की तश्हीर की जा रही है तो ये ऐन हुक्मे इलाही के मुताबिक़ है इस में कोई शरई क़बाहत नहीं। नफ़से ताज़िया में शरअन कोई क़बाहत नहीं है इस लिए कि अशया में अस्ल इबाहत है जिस तरह मुरव्वजह उरसों में ममनूआते शरइया के ख़ल्त मल्त के बावुजूद नफ़्से उर्स के जवाज़ में शरअन कोई कलाम नहीं है। इसी तरह नफ़से ताज़िया के जवाज़ में शरअन कोई कलाम नहीं है बल्कि यह औलिया अल्लाह और बुज़ुर्गाने दीन के नज़्दीक पसन्दीदा व महबूब है । हिन्दुस्तान व बर्रे सग़ीर की जितनी असली क़दीमी ख़ानक़ाहें हैं ताज़िया दारी का रिवाजो मामूल सारी ख़ानक़ाहों में है इल्ला माशा अल्लाह ।

**ताज़िया दारी और बुज़ुर्गाने दीन का मामूल** : उल्माए फ़िरंगी महल लखनऊ के पीरो मुर्शिद और सिलसिलए कादरिया के अज़ीम बुज़ुर्ग शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बॉसवी अलेहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि ताज़िये को यह न जाने कि यह ख़ाली काग़ज और बत्ती है।अरवाहे मुक़द्दसा भी इस तरफ़ मुतवज्जाह होती हैं (करामाते रज़्ज़ाक़िया सफ़ह 15)
माज़ी क़रीब के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग सिलसिलए वारसिया के बानी हज़रत आलम पनाह हाजी हाफ़िज़ वारिस अली शाह ताजदारे देवा शरीफ़ अलैह रहमतो रिज़वान का इरशादो अमल भी ताज़िया से मुताल्लिक़ यह जानते हुए सुनें कि ख़बरदार ! ताज़िया को कोई यह न समझे कि ख़ाली काग़ज़ पत्ती और बॉस की खपच्चियों का ढॉचा है।मलहूज़ रहे कि अरवाहे क़ुदसिया सैयदुश्शोहदा अला नबीयना व अलैहिस्सलातो वस्सलाम और जुमला शोहदाए करबला इस तरफ़ मुतवज्जोह होती हैं"माहे मुहर्रम में हुज़ूर पुरनूर(वारिसे पाक) ताज़िया ख़ानों में जाते थे और अब आख़िर जमाने में भी देवा शरीफ़ में छोटी बीबी और घसीटे मियॉ के ताज़ियों में कभी थोड़ी देर नशिस्त फ़रमाते और कभी सामने खड़े होकर चले आते थे।सुब्ह को कुल बस्ती के ताज़िए आपके दरवाज़े पर आते हुज़ूर अनवर इस वक़्त बाहर तशरीफ़ रखते थे और खड़े हुए देखते रहते थे।जब ताज़िया दार ताज़ियों को लेकर चले जात थे उस वक्त हुज़ूर अनवर (वारिसे पाक) अन्दर तशरीफ़ लाते थे ताज़ियों को देखते वक़्त चेहरए अनवर की अजीब हालत मुशाहिदे में आती थी और देर तक हुज़ूर अनवरे आलमे सुकूत में रहते थे।अशरए मुहर्रम और चहल्लुम के रोज़ आस्तानए आली पर सबील रखी जाती थी।(मिश्काते हक़्क़ानिया अल मारूफ़ ब मुआरिफ़ेवारसिया सफ़ह110मुअल्लिफ़ सैयद मौल्वी फ़ज़लहुसैन साहब वारसी)
शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहल्वी का ताज़िया को कांधा लगाना अलत तवातर मसमूअ है (मनक़ूल अज़ असरारुल्लाह बिश्शहादतैन सफ़ह 89)
हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक बॉसवी अलैहि रहमतो रिज़वान जिस वक़्त ताज़िया उठता नंगे पैरों तशरीफ़ ले जाते थे । जब तक ताज़िया रखा रहता तो आप हाथ बान्धे खड़े रहते(करामाते रज़्ज़ाक़िया सफ़ह 15)हज़रत शाह नियाज़ अहमद बरेलवी शबे आशूरह दो बजे ताज़िया की ज़्यारत को तशरीफ़ ले

जाते जब हुज़ूर को कमज़ोरी ज़्यादा हो गया तो दूसरों की इयानत से तशरीफ़ ले जाते थे हज़रत ने ताज़िया के तख़्त को बोसा दिया (करामात निज़ामिया सफ़ह 337) शेख़ुलमशायख़ ख़्वाजा हसन निज़ामी फ़रमाते हैं कि ताज़िया दारी में इशाअते इस्लाम की भलाई पोशीदा है(मन्क़ूल अज फ़ात्मी दावते इस्लाम सफ़ह 121)हज़रत शाह क़ुतबुद्दीन सम्भली का मामूल था कि आपके सामने ताज़िया आता तो पलंग से नीचे उतर कर खड़े रहते और रोते रहते थे (फ़तावए ताज़िया दारी सफ़ह 3) फ़तावए अज़ीज़िया सफ़ह 75 पर है कि ताज़िया के सामने जो रखकर फ़ातिहा किया जाता है मुतबर्रक है।

मुफ़स्सिरे क़ुरआन अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुहम्मद इन्तिख़ाब हुसैन क़दीरी साहब मद्दज़िल्लहु अपने हफ़्त रोज़ा अख़बार निदाए अहले सुन्नत वीकली 21 फ़रवरी सन्2003में हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल सैयद मुहम्मद नईम उद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमा के मामूल को उनके साहब ज़ादे हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद इज़हार उद्दीन साहब नईमी उर्फ़ हनफ़ी मियॉं के हवाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सदरुल अफ़ाज़िल हमेशा ताज़िया बनाने में चन्दा देते थे और अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िए की मुख़ालिफ़त न की। ख़ानवादए मदारिया के मशाएख़े एज़ाम व उल्माए किराम ताज़िया के जुलूस में बड़े एहतमाम के साथ शरीक होते हैं। आगे आगे ताज़िया होता है पीछे उल्मा व मशाएख़ का जम्मेग़फ़ीर होता है। मरासी व नोहाजात पढ़े जाते हैं अक्सर बुज़ुर्गों की ऑंखे इस मौक़े पर अश्कबार होती हैं ख़ानक़ाहे मुक़द्दसा की तरफ़ से दरगाहशरीफ़ की मालियत से दो अज़ीमुश्शान करबला निशान ताज़िए बनाये जाते हैं। दसवीं मुहर्रमुलहराम की शामे ग़रीबॉं तक गश्त करते हैं । आख़ीर में दम्माल शरीफ़ में फ़ातिहा ख़्वानी व तक़्सीम लंगरे अज़ीम होती है और ताज़ियों को दरगाह शरीफ़ के दालान में रख दिया जाता है।

**हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का ताज़िया**: इसी तरह 25 मुहर्रम शरीफ़ को सैयदना हुज़ूर बाबा फ़रीद उद्दीन मसूद गंज शकर رضي الله عنه के उर्स मुबारक

के मौके पर हुज़ूर बाबा साहब का चिल्ला ख़ाना खुलता है जिसमें सैयदना सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ हुज़ूर मुईनुल मिल्लत वद्दीन अजमेरी ﷺ का चॉदी का ताज़िया शरीफ़ रखा हुआ है।ज़ाएरीन इसकी ज़्यारत से फ़ैज़ियाब होते ह"(दीने मुहम्मदी और ताज़िया दारी ब हवालए ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म सफ़ह 30)

## ताज़िया दारी से मुताल्लिक़ अकाबिर उलमाए अहले सुन्नत व सूफ़ियाए किराम के फ़तावे और मामूलात :

सवाल :-क्या ताज़िया दारी इस्लाम में जाइज़ है ? हिन्दुस्तान में फ़ुक़हाए इस्लाम व बुज़ुर्गाने दीन का क्या अमल है ?

**ख़ानक़ाहों में ताज़िया दारी** : अज़ीम हिन्दुस्तान की तारीख़ में बारहवीं सदी ई० से ताज़िया दारी का सुबूत मिलता है सन्1170ई० में हिन्दुस्तान में सिलसिलए चिश्तिया के बानी हुज़ूर ख़्वाजा मुईन उद्दीन हसन संजरी अजमेरी की हयात में ताज़िया दारी का सुबूत मिलता है आज भी अजमेर मुअल्ला में 7 मुहर्रम से दस मुहर्रम तक सुन्नी ख़ानक़ाही लोग ताज़िया दारी में मसरूफ़ रहते हैं । 5 मुहर्रम को बाबा फ़रीद मसूद गंज शकर रहमतुल्लाह अलैह के उर्स के मौके पर बाबा साहब का चिल्ला ख़ाना खुलता है जिसमें ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का चान्दी का ताज़िया रखा हुआ है ज़ाएरीन इसकी ज़्यारत से फ़ैज़याब होते हैं।(राहे इस्लाम सफ़ह 74–87)

हिन्दो पाक में जितनी क़दीम ख़ानक़ाहें मसलन हज़रत सैयद बदी उद्दीन ज़िन्दाशाह मदार मकनपुर शरीफ़ की ख़ानक़ाह, हज़रत सैयद सालार मसूद ग़ाज़ी बहराइच शरीफ़ की ख़ानक़ाह, हज़रत मख़्दूम ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईन उद्दीन चिश्ती की ख़ानक़ाह अजमेर शरीफ़, हज़रत बाबा फ़रीद उद्दीन गंज शकर की ख़ानक़ाह पाक पट्टन, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की ख़ानक़ाह दिल्ली, हज़रत साबिर की कलियर की ख़ानक़ाह,हज़रतमख़दूम अलाउल हक़ पण्ड़वी की ख़ानक़ाह पण्ड़वा शरीफ़, हज़रत ख़्वाजा बन्दा नवाज़गेसू दराज़ की ख़ानक़ाह, हज़रत बाबा ताजुद्दीन नागोरी की ख़ानक़ाह, हज़रत सैयदना सैयद मख़दूम अशरफ़ जहॉगीर की ख़ानक़ाह किछोछा शरीफ़, हज़रत मख़दूम अब्दुलहक़ की ख़ानक़ाह रुदौली शरीफ़, हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक़

बॉसवी की ख़ानक़ाह बॉसा शरीफ़, हज़रत मख़दूम याहया मुनीरी की ख़ानक़ाह मुनीर शरीफ़ बिहार, सफ़ीपुर की ख़ानक़ाह, सण्डीला शरीफ़ की ख़ानक़ाह,भागलपुर की ख़ानक़ाह शहबाज़िया ग़रज़ कि हिन्दुस्तान की हर सुन्नी ख़ानक़ाह में ताज़िया दारी होती है गोया ताज़िया दारी मामूलाते अहले सुन्नत में दाख़िल है ।

**मलेकुल उलमा बहरुल उलूम का ताज़िया दारी रोकने वालों से जिहाद का एलान :**

हज़रत मलेकुल उलमा बहरुल उलूम अल्लामा अब्दुल अली मुहम्मद लखनवी फिरंगी महल अलैहिर्रहमत जिन्हें मौलाना अहमद रज़ा ख़ॉ फ़ाज़िले बरेलवी भी मलेकुल उलमा बहरुल उलूम के लक़ब से याद करते हैं तफ़सील के लिए शरहुलमतालिब सफ़ह 69 देख सकते हैं इन्हीं मलेकुल उलमा बहरुल उलूम का ताज़िया दारी के लिए जिहाद करने का एलान एक शागिर्द की ज़बानी सुनिये।किताब अक़ाएदे अज़ीज़िया का मोअल्लिफ़ मोल्वी मुंशी सूफ़ी अज़ीज़ उल्लाह चिश्ती निज़ामी सफ़वी मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत ख़ादिम मुहम्मद सफ़ी कुद्दिस सिर्रहुलअज़ीज़ रक़म तराज़ है कि फ़क़ीर के वालिद माजिद मुंशी मुहम्मद याहया अली ख़ॉ साहब क़ादरी अलैहिल ग़ुफ़रान हज़रत मौलाना सैयद अब्दुर्रहमान पंजाबी लखनवी मुजद्दिदी कुद्दिस सिर्रहुल अज़ीज़ के मुरीद व मुख़लिस थे फ़रमाते थे कि बहरुल उलूम मौलाना अब्दुल अली लखनवी फ़िरंगी महली ने ताज़ियादारी के नाजाएज़ होने का फ़तवा दे दिया वालिए शहर ने शहर बदर करने का हुक्म दिया मौलाना बहरुल उलूम को तामीले हुक्म से पहले ख़बर हो गयी रात को आप ख़ुद ही चल खड़े हुए और मद्रास चले गये वहॉ का नवाब सुन्नी था उसने इस्तेक़बाल किया और उनकी पालकी में कॉधा दिया और ले गया फिर आप वहॉ मुदर्रिस हुए एक साल अंग्रेज़ों ने फ़सादाते मुहर्रम देख कर इस्तेफ़्ता किया उलमा ने फ़तवा दिया कि ताज़िया नाजाएज़ है जब इस्तिफ़्ता मौलाना बहरुल उलूम के पास आया आपने हथियार बान्धे और 60—70 तालिबे इल्म जो मदर्से में थे सब से कहा हथियार बन्द हो जाओ और फ़तवा न दिया और कहा अंग्रेज़ अगर ताज़िया बन्द करेंगे तो हम उनसे जिहाद करेंगे मौलाना सैयद अब्दुर्रहमान मुजद्दिदी लखनवी

ने बहरुल उलूम से सनदे फ़राग़त हासिल की थी उन दिनों आप भी मदर्से में थे फ़रमाते थे कि हम भी तीन दिन हथियार बन्द रहे तीसरे दिन वह फ़िरंगी जिसने इस्तेफ़्ता किया था और हाकिम था आया और कहा आप हथियार खोल डालिये हम ताज़िया दारी बन्द न करेंगे तब मौलाना बहरुल उलूम ने हथियार खोले(अक़ाएदे अज़ीज़िया सफ़ह 104–105 मोल्लिफ़ हज़रत मोल्वी मुंशी सूफ़ी अज़ीज़ उल्लाह चिश्ती निज़ामी सफ़वी मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत ख़ादिम मुहम्मद सफ़ी कुद्दिस सिर्रहुलअज़ीज़ सन् तबाअत1908ई०)

**ताज़िया दारी शआयरे इस्लाम है उलमाए फ़िरंगी महल का फ़तवा :**

और बहरुल उलूम के बाद नबीरए बहरुल उलूम हज़रत मौलाना अब्दुल वाहिद हनफ़ी फ़िरंगी महली रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं(तर्जुमा) उस जमाने के उलमाए सालिहीन ने ताज़िया दारी शआयरे इस्लाम समझा और उसकी सराहत व क़याम के बारे में फ़तवा दिया है।

किताब ख़ज़ीनतुल्मुत्तक़ीन में इस अम्र की तसरीह की गई है कि मुफ़्ती को चाहिए कि ज़माने का लिहाज़ करते हुए फ़तवा दे। इसी बिना पर उल्माए स्वालिहीन इमाम अलैहिस्सलाम के ताज़िया रखने और अज़ादारी करने के बारे में जो फ़तवा दिया है वह बिलकुल सही व दुरुस्त है और उसकी तरवीज सवाबो अजरे अज़ीमका मूजिब है इसी तरह आइन्दा भी इस क़िस्म के फ़तवों पर अजरो सवाब की उम्मीद है क़तअ नज़र इस अम्र के यह बात भी है कि मरासिमे ताज़िया दारी इमाम عليه السلام सैकड़ों साल से जारी व मुरव्वज हैं मुतशर्रा शाहाने इस्लाम के ज़माने में भी मिस्ल जलाल उद्दीन अकबर जहाँगीर व शाह जहाँ और आलमगीर औरंगज़ेब के ज़माने हुकूमत में ताज़ियादारी होती थी यह वो सलातीन थे जो तमाम ममलकते हिन्द में क़ाबू याफ़्ता थे और उनके अहकाम जारी थे उस ज़माने में ताज़ियादारी के रुसूम अच्छी तरह से अदा किये जाते थे नवाब सादुल्लाह ख़ाँ वज़ीरे आज़म शाह जहाँ एक ज़बर दस्त आलिम मुतबहिर थे ऐसे ही क़ाज़िउलक़ुज़ात मुस्तइद ख़ाँ अल्लामए दौराँ थे ये लोग हनफ़ी मज़हब के सख़्ती से पाबन्द थे उनके अलावा और दूसरे उल्मा भी थे लेकिन किसी ने भी इनमें से ताज़िया दारी की मुख़ालफ़त नहीं की ।

अगर ताज़िया दारी ख़िलाफ़े शरअ होती तो यक़ीनन ये लोग बन्द करवा देते ये लोग बादशाही सरकार में काफ़ी रुसूख़ व इख़्तियार रखते थे और बादशाह ख़ुद भी मुतशर्रा व पाबन्दे मज़हब था अगर कोई इस जानिब उनको मुतवज्जोह न भी करता तो ख़ुद उसे बन्द करवा देते इसके बर अक्स ताज़िया दारी उस ज़माने में आम तौर से जारी थी और अब भी जारी है और इंशा अल्लाह तआला क़यामत तक जारी रहेगी आज तक किसी ने भी चाहे अवाम से हो या चाहे ख़वास में से उस ज़माने से आज तक मुख़ालफ़त नहीं की इस सूरत से गोया साबित व मुतहक़्क़क़ है और यह हदीस शरीफ़ बतवातुर मरवी है कि لن یجتمع امتی علیٰ ضلاله मेरी उम्मत ज़लालतो गुमराही पर कभी मुत्तफ़िक़ न होगी इस लिए कि यह लोग जिस पर इजमा कर लेंगे वही हक़ होगा ऐसी हालत में अगर कोई शख़्स ताज़िया दारी से इनकार करे और उसको ख़िलाफ़े शरअ क़रार दे तो यह इजमाए उम्मत के ख़िलाफ़ है और गोया तवातुर से इनकार करना है और यह अम्र उसूले फ़िक़ाह की बिना पर बिल्कुल ममनूअ होगा। (बहवालए मसलके अहले सुन्नत और अज़ादारी पर तहक़ीक़ी नज़र सफ़ह 8—9—10 मुसन्निफ़ मौलाना अबुलकमाल सैयद अहमद साहब शम्सी काज़मी मुफ़्तीए आज़म टोंक )

**हज़रत औरंगज़ेब का ताज़िया सर पर उठाना** : हज़रत आलमगीर औरंगज़ेब रहमतुल्लाह तआला अलैहि मुग़ल बादशाहों में विलायत और मुजद्दियत के मुक़ाम पर फ़ाएज़ व मुतमक्किन बताये जाते हैं हयाते आला हज़रत का मुसन्निफ़ मलेकुल उलमा मौलाना ज़फ़रुद्दीन बिहारी ख़लीफ़ा मौलाना अहमद रज़ा ख़ॉं फ़ज़िले बरेलवी लिखते हैं''और मुजद्दिदे मेयतेसानी अशर सुल्ताने दीन परवर मालिके बहरो बर अबुल मुज़फ़्फ़र मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब बहादुर आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी मुतवल्लिद 1028 हि० मुतवफ़्फ़ी 1117 हि० थे।(हयाते आला हज़रत सफ़ह 426 जिल्द दोम मतबूआ बरकात रज़ा पोरबन्दर गुजरात)

इस सुल्ताने दीन परवर मुजद्दिद मेयतेसानी अशर आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी का अमलो किरदार ताज़िया दारी से मुताल्लिक़ क्या है ? मुलाहिज़ा फ़रमायें मौलाना अबुल कमाल सैयद अहमद शम्सी काज़मी रक़म तराज़ हैं''हिन्दुस्तान

के मुस्लिम सलातीन में सबसे ज़यादा कट्टर सुन्नी मुसलमान हज़रत मुही उद्दीन आलमगीर औरंगज़ेब नक़्शबन्दी को कहा जाता है लेकिन हम देखते हैं कि ताज़िया दारी को उन्हों ने भी बन्द न किया बल्कि उसमें दिलचस्पी ली। चुनान्चे एक अज़ीम मुवर्रिख़ प्रोफ़ेसर सील चन्द ने अपनी किताब तारीख़े आलमगीरी में लिखा है कि रोज़े आशूरा आलमगीर ने एक ज़ईफ़ा को देखा कि सर पर ताज़िया रखे क़िले की तरफ़ जा रही है देखने के साथ ही बादशाह पर जज़्बो इस्तेग़राक़ की कैफ़ियत जो कश्फ़ो मुशाहिदे से हासिल होती है तारी हो गयी जिस से वह सरो पा बरहना उस ज़ईफ़ा की तरफ़ पीछे पीछे दौड़ा यहाँ तक कि ताज़िया उस से लेकर अपने सर पर रख लिया और क़िले में दाख़िल हुआ और उसी वक़्त से अज़ादारी करने लगा ।

**बादशाह औरंगज़ेब ने ताज़िया उठाने की इजाज़त दी**:वाज़ेह हो कि अहदे आलमगीरी के असबाब अज़ादारी अभी तक आगरा के क़िले में महफ़ूज़ थे जिनकी हिफ़ाज़त गवर्नमेन्ट ख़ुद करती थी यही नहीं बल्कि आगरा के क़िलेमें गवर्नमेंन्ट की तरफ़ से मजालिसे अज़ा भी बरपा होतीथीं । इसी तरह अहदे आलमगीरी में ताज़िया दारी के सिलसिले में एक दाख़ली शहादत पेश करते हैं अहदे आलमगीरी का एक मशहूरो मारूफ़ मुवर्रिख़ ख़ाफ़ी ख़ाँ अपनी तारीख़ में लिखता है कि बुरहान पुर में ताज़ियादारों का यह दस्तूर था कि मजलिस के बाद ताज़िया उठाया करते थे जिस पर वहाँ के मुतास्सिब सुन्नियों ने ऐतराज़ किया यहाँ तक कि औरंगज़ेब की अदालत तक मुआमला पहुँचा लेकिन मुन्सिफ़ व मुतशरा बादशाह ने फ़ैसला ताज़िया दारी के मुवाफ़िक़ किया और ताज़िया उठाने की इजाज़त दी ।

इस्लामी इन्साइकिलो पीडिया जिल्द अव्वल आठवाँ एडीशन मुरत्तवा सैयद क़ासिम महमूद मतबूआ अलफ़ैसल उर्दू बाज़ार लाहौर पाकिस्तान के सफ़्ह 557 पर है कि “ हिन्दुस्तान में ताज़िए का रिवाज सोलहवीं सदी में हुआ शहंशाह आलमगीर के ज़माने में ताज़िया और जुलूसे ताज़िया का रिवाज था आलमगीर ने ताज़िए के जुलूस में शमशीर ज़नी को ममनूअ क़रार दिया था अलग़रज़ 13वीं सदी हिजरी से १८वीं सदी हिजरी तक पूरे हिन्दुस्तान में

ताज़िया दारी आम हो गयी थी।(इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ इस्लाम)
सनदुल मुताख़िरीन इमामुल मुहक़्क़ीन सैयदुल आरफ़ीन हज़रत मौलाना हाफ़िज़ शाह मुहम्मद फ़ायक़ साहब वास्ती हनफ़ी निज़ामी नियाज़ी अलैहिर्रहमा ने तो एक मुस्तक़िल रिसाला जवाज़े ताज़िया दारी में तसनीफ़ फ़रमाया है जिसमें उसूले अहले सुन्नत के चारो दलायल शरइया से ताज़िया दारी को जाएज़ साबित किया है रिसालए शरीफ़ा मज़कूरा 1333 हिजरी में मतबा अस्रे जदीद मेरठ में छपा है ।(मसलके अहले सुन्नत और अज़ादारी सफ़ह 13मतबूआ सरफ़राज़ क़ौमी प्रेस)नाज़रीने किराम अब इन्साफ़ फ़रमायें कि बादशाह इस्लाम आदिल व सिक़ह दीन परवर बारहवीं सदी का मुजद्दिद हज़रत आलमगीर औरंगज़ेब रहमतुल्लाह तआला अलैहि ताज़िया दारी और जुलूसे ताज़िया को फ़रोग़ और रिवाज दे रहे हैं और आज के कुछ मोलवी हज़रात ताज़िया देखना नाजाएज़ बताते हैं ।

इंसाफ़ को आवाज़ दो इनसाफ़ कहाँ है

अंग्रेज़ों की आमद से पहले उस वक़्त के पूरे हिन्दुस्तान में मुसलमान दो जमात में ही बंटे हुए थे सुन्नी और शिया उनमें जो सुन्नी थे वो चार मसलकों हनफ़ी शाफ़ई हमबली व मालिकी में से किसी एक मसलक के पाबन्द थे और उनकी पीरी मुरीदी के मशरब क़ादरी, चिश्ती, सोहरवर्दी, नक़्शबन्दी और मदारी थे जैसा कि सफ़ीनतुल औलिया में दारा शिकोह क़ादरी ने तहरीर किया है और यह सारे शिया और सुन्नी हज़रात ताज़िया दारी करते थे और जाएज़ मानते थे जैसा कि मुल्ला निज़ामुद्दीन अल्लामा बहरुल उलूम और अब्दुल वाहिद फ़िरंगी महल के फ़तवों और मामूलात से ज़ाहिर है उस वक़्त न कोई वहाबी था न देव बन्दी बरेलवी न क़ादयानी न नेचरी और न ही चकड़ालवी और नदवी।अंग्रेज़ों के ज़माने में ये सब जमाअतें पैदा हुयीं और ताज़िया दारी के ख़िलाफ़ लिखने और बोलने लगीं नफ़से ताज़िया दारी में जो उमूर जाएज़ो मुबाह हैं वो हमेशा जाएज़ो मुबाह रहेंगे और जो ख़ारजी मुहर्रमात दाख़िल किये जा रहे हैं और लग़वियातो लहव व लइब का इन्द्राज हो रहा है मुसलमानों को उन ख़ुराफ़ात व बिदआत शनीआ को ताज़िए से अलग कर देना चाहिए और

सीना कूबी चाक गरीबानी और दीगर उमूरे ममनूआ से बिलकुल दूर रहना चाहिए ।

**ताज़िया की तरफ़ अरवाहे मुक़द्दसा मुतवज्जेह होती हैं** : मलफ़ूज़े रज़्ज़ाक़ी सफ़ह104पर है कि (तर्जुमा) यानी हज़रत सैयदना अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बॉसवी अलैहिरहमतो रिज़वान कुद्दस सिर्रहु भी ज़रीह मुबारक जो इस वक़्त ताज़िए से मशहूर है की ज़्यारत के लिए कभी तशरीफ़ ले जाते और कभी नहीं तशरीफ़ ले जाते एक दिन9मुहर्रमुलहराम को को कल्यानी नदी की तरफ़ आप तशरीफ़ ले गये दर्मियाने राह ताज़िया दार ताज़िया शरीफ़ तैयार करके रखे हुए थे जनाब ममदूह ताज़िया मुतबर्रका की ज़्यारत के लिए नहीं गये।रात में ख़्वाब देखा कि उसी ताज़िए के पास मैं गया हुआ हूँ जनाब इमामैन शहीदैने मासूमैन जिगर गोशए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺव नूर दीदए अली मुरतिज़ा हज़रत इमाम हसन अलमुजतबा व इमाम हुसैन शहीदे करबला عليهما السلام रौनक़ अफ़ज़ा हैं देखते ही इमामों का इरशाद हुआ ऐ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ! हमारे मकान पर तू नहीं आया जनाब मौसूफ़ ने क़दम बोसी के शरफ़ से मुशर्रफ़ होकर अर्ज़ किया कि मेरी क्या बिसात है कि पाको मुतहहर बारगाह में हाज़री न दूँ।उस दिन से अशरए मुहर्रम में हर रोज़ ताज़िया की ज़्यारत के लिए तशरीफ़ ले जाते थे और अक्सर फ़रमाते कि ताज़िया जिसे काग़ज़ और बॉस की लकड़ी से बनाते हैं उसे सिर्फ़ लकड़ी और काग़ज़ तसव्वर नहीं करना चाहिए बल्कि कभी कभी अरवाहे मुक़द्दसा(हज़रत इमामैन करीमैन)भी मुतव्वजह होती हैं और यह मामूल भी मुक़र्रर फ़रमाया कि जब ताज़िया लोग उठाते हज़रत ख़ुद पेशवाई फ़रमाकर अपने मकान पर लाते थे जब तक वहॉ ताज़िया होता आप हाथ बान्ध कर खड़े रहते । आख़री उम्र में ज़ोफ़ो कमज़ोरी के सबब दीवार के सहारे या असा की कुव्वत से खड़े रहते । जब ताज़िया लोग उठा ले जाते आप कल्यानी नदी तक साथ तशरीफ़ ले जाते और दफ़्न के वक़्त में शिरकत फ़रमाते थे बादहु अपने घर वापस होते और इसी दस्तूर से हज़रत शाह सैयद गुलाम दोस्त मुहम्मद व जनाब सैयदना

मुर्शिदना हज़रत शाह गुला अली क़द्दसल्लाहु असरारहुम भी अमल फ़रमाते थे।
**ताज़िया पाक में हज़रत हुसैने पाक عليه السلام का दीदार**ःदारुन्नूर मकनपुर शरीफ़ में यह क़िस्सा मशहूरो मारूफ़ है कि हज़रत मौलाना सैयद शाह आलम रहमतुल्लाह तआला अलैहि एक साहिबे करामत बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत मौलाना सैयद अहमद हसन रहमतुल्लाह अलैहि नये नये फ़ज़ीलत की सनद लेकर आये मुहर्रम शरीफ़ में जब ताज़िया शरीफ़ का जुलूस निकलता तो मोलवी साहब रास्ते से कतराकर निकल जाते और मुँह छुपाने की कोशिश करते ताजिए से एराज़ फ़रमाते थे एक दिन पीरो मुरशिद सैयद शाह आलम रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने मोलवी अहमद हसन साहब का ताज़िए के ख़िलाफ़ कुछ कहते सुन लिया जनाब सैयद शाह आलम साहब रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने मोलवी अहमद हसन साहब का सर पकड़ कर ताज़िया शरीफ़ से लगा दिया और इरशाद फ़रमाया कि देख ताज़िए के अन्दर किसका जलवा है मोलवी साहब देखते हैं कि ताज़िया शरीफ़ के अन्दर हज़रात इमामैन करीमैन رضي الله عنهما ख़ाको ख़ून में ग़लताँ बैठे हुए हैं।अल्लाह अकबर ! सच फ़रमाया हज़रत सैयदना अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बाँसवी अलैहिरहमाँ ने कि ताज़िया शरीफ़ की तरफ़ अरवाहे मुक़द्दसा भी मुतवज्जह रहती हैं ।
**अलम का शरई हुक्म** :मुहर्रम का चाँद देखते ही सुन्नी मुसलमान अलमे हुसैनी हाथों में लेकर या हुसैन या हुसैन के नारों के साथ जुलूसे अलम निकालते हैं और हज़रते इमाम अब्बास अलमबरदार رضي الله عنه की याद ताज़ा करते हैं शाएरे फ़ितरत अल्लामा अदीब मकनपुरी फ़रमाते हैं ।

करते हैं सब ज़िक्रे हुसैनी प्यार से घर घर गली गली
नामे यज़ीदी की रुस्वाई आज भी दर दर गली गली
ले के अलम अब्बास का बच्चे कूचा कूचा फिरते हैं
फ़ौजे यज़ीदी कहीं नहीं है अली का लश्कर गली गली

अलम रखना और उठाना रसूलल्लाह ﷺ की सुन्नत है तिरमिज़ी और इब्ने माजह वग़ैरह हदीस की किताबों में है कि रसूलल्लाह ﷺ का अलम सियाह

और सफ़ेद रंग का था हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा कर्रमअल्लाह वजहुल करीम ने रसूले पाक ﷺ का अलम उठाया हज़रत इमाम मुहम्मद हनीफ رضی اللہ عنہ जिन्हें मुहम्मद बिन हनफ़िया कहा जाता है आपने हज़रत मौला अली कर्रम उल्लाह वजहहुल करीम का अलम उठाया और हज़रत इमामअब्बास बिन अली करम उल्लाह वजहुल करीम अलम बरदार ने हज़रत सैयदुश्शोहदा इमाम हुसैन علیہ السلام का अलम उठाया और सुन्नी मुसलमान हज़रात इमामैन करीमैन के झण्डों और अलमों की नक़्ल में शौकते हुसैनी की याद ताज़ा करने के लिए और फ़तेह हुसैनियत के एलान के लिए अलमे हुसैनी का जुलूस निकालते हैं ।

**मुफ़्ती मुईन उद्दीन अशरफ़ी सम्भल का फ़तवा** :सदर मुफ़्ती मर्कज़ी दारुल इफ़्ता आस्तानए मुहद्दिसे आज़मे हिन्द किछोछा मुक़द्दसा हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद मुईन उद्दीन अशरफ़ी शम्सी साकिने हाल सम्भल इरशाद फ़रमाते हैं आमाल का गहरा तअल्लुक़ है नियतों से और आदमीं के लिए वो है जो उसने नियत की । अलम निशान और झण्डे को कहते हैं और ज़ाहिर है कि अलम या चोब फ़ीनफ़सेही बुरी चीज़ नही और मुसलमानों के अक़्वालो अफ़आल हत्तल इमकान अच्छे मानी व मक़ासिद पर महमूल किये जायेंगे हज़रत इमाम अबुल हसन करख़ी क़ुद्दस सिर्रहुल क़ुदसी अलउसूल में रक़्म तराज़ हैं।

امورالمسلمین محمولة علی السدا د و الصلاح حتی یظهر غیره۔

सुन्नी मुसलमानों का अलम उठाना इजमाई शक्ल में,हज़रत सैयदना इमाम हुसैन علیہ السلام का ज़िक्र करना, आप के फ़जाइलो मनाक़िब का चर्चा करना और हज़रत इमाम رضی اللہ عنہ की ख़ुदा दाद शानो शौकत का एलान करते हुए और आप رضی اللہ عنہ की फ़तेह अज़ीम का झण्डा उठाये हुए जुलूस की शक्ल इख़्तियार कर लेना कि देखने और सुनने वाले ज़्यादा से ज़्यादा हज़रत सैयदना इमाम आली मुक़ाम رضی اللہ عنہ को याद करें, आपके सब्रो इस्तेक़लाल, अज़्मो हिम्मत,

शुजाअतो जवाँ मर्दी के पाकीज़ा तसव्वुरात से अपने कुलूब व इज़हान को आरास्ता व पैरास्ता करें और हर हाल में शरीअत पर अमल करते रहने का हौसला पायें बिल्कुल जाएज़ है ............अल्लाह के महबूब बन्दों की अज़ीमो जलील शानो शौकत ज़ाहिर करने के लिए अलमो जुलूस की शक्ल इख़्तियार करना अलमो जुलूस के ज़रिये भी अपने मोहसिन की अज़मतों का एतराफ़ क्यूँ नाजाएज़ होगा, हक़ीक़त यह है कि इज़हारे शाने इमाम के लिए अलम उठाना बा अदब जुलूस की शक्ल इख़्तियार करना ब कसरत फ़वायद पर मुशतमिल है कितनों को इस जुलूस के तुफ़ैल हज़रत इमाम का नाम याद हो जाता है .............सैयदना इमाम हुसैन عليه السلام की अज़मत ज़ाहिर करने की नियत से अलम उठाना अच्छा है इसमें कोई क़बाहत नहीं।

(मुलख़्ख़सन ज़रूरी मसाइल (द) अज़ मुफ़्ती मुहम्मद मुईन उद्दीन अशरफ़ी सम्भली सफ़ह 3/4/5/6/7/8)

**अलम से मुताल्लिक़ हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर का फ़रमान :**

लताएफ़े अशरफ़ी में हुज़ूर सैयदना सैयद अशरफ़ जहाँगीर समनानी का मलफ़ूज़ है कि"अलम मुल्के तजरीद में सुलूक का झण्डा है । अलम रसूलल्लाह ﷺ की सुन्नत है और मुजाहिदीने इस्लाम का शयार है।शाहाने रोज़गार अपनी हशमत और दावए मिल्कियत के लिए झण्डा नसब करते थे और यह शरअन जाएज़ है। फ़ुक़रा आख़िरत के सलातीन हैं । जब दुनियावी बादशाहों को झण्डा नसब करना जाएज़ है तो फ़ुक़रा को बतरीक़ आला अपनी दौलतो नेअमत ज़ाहिर करने के लिए अलम का नसब करना जाएज़ होना चाहिए। हज़रत रसूल عليه السلام जब ख़ैबर की तरफ़ मुतवज्जोह हुए तो अपना झण्डा हज़रत अली के सुपुर्द किया था हज़रत अली कर्रम उल्लाह वज्हु कहते थे कि ख़ुदा क़सम मैंने ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी ताक़त से नहीं तोड़ा बल्कि मुझको मलकूत से ताईद थी इसी बिना पर बाज़ सादात अपनी मीरास समझ कर अलम रखते हैं सैयद अशरफ़ रहमतुल्लाह अलैहि को नजफ़ अशरफ़ में सैयद रज़ी उद्दीन वग़ैरह।

नक़ीबों ने झण्डा रखने की इजाज़त दी थी और सनद दी थी, मख़दूम जहाँनियाँ सैयद जलाल उद्दीन बुख़ारी ने चौदा ख़ानवादों की इजाज़त सैयद अशरफ़ रहमत उल्लाह अलैहि को इनाएत फ़रमाई थी और उन सब के अशग़ाल व अज़कार व मामूलात के अलावा अलम रखने की इजाज़त भी दी थी (लताएफ़े अशरफ़ी हिस्सा दोम सफ़ह 244–245 मतबूआ मख़दूम अशरफ़ अकेडमी किछोछा शरीफ़)

**अशरए मुहर्रम में अलम से मुताल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन का मामूल** : अकाबिरे रोज़गार और सादात सहीउन्नसब का अमल है कि वह मुहर्रम के इब्तिदाई दस रोज़ में दौरा करते हैं और ज़म्बील को भी गरदिश देते हैं । विलायते सब्ज़दार में सैयद अली क़लन्दर ख़्वाजा यूसुफ़ चिश्ती के मुरीद बड़े आली मर्तबा बुज़ुर्ग थे और उनका मामूल था कि मुहर्रम के अशरए अव्वल में अलम के नीचे बैठते थे और अपने मुरीदों कौ दौरे के लिए भेज देते थे और कभी ख़ुद भी दौरा करते थे।ग़म व अन्दोह के मरासिम बजा लाते, नफ़ीस लिबास इस अशरे में नहीं पहनते थे और ऐशो शादी के असबाब तर्क कर देते थे।सैयद अशरफ़ रहमतुल्लाह अलैहि ने भी कभी यह दौरा तर्क नहीं किया । सैयद अली क़लन्दर की तरह ख़ुद अलम के नीचे बैठते और असहाब को दौर की इजाज़त देते लेकिन अशरे के आख़िरी तीन दिन ख़ुद भी असहाब के साथ गलियों में गश्त लगाते थे ।

(लताएफ़े अशरफ़ी हिस्सा दोम सफ़ह 246)

हज़रत मख़दूम अला उद्दीन पण्डवी का भी यही दस्तूर था कि अशरए मुहर्रम के इब्तिदाई दस दिन गिरिया वज़ारी में बसर करते थे और फ़रमाते थे कि वह वली भी अजीबो ग़रीब होगा जो ख़ानदाने रसूल और जिगर गोशाने बुतूल के मातम पर आँसू न बहाए और उनका ग़म न करे ।

**ढोल, नक़्क़ारा और डंका बजाने का शरई हुक्म** : सवालः– मुहर्रमुल हराम में जुलूसे अलम और जुलूसे ताज़िया में ढोल बजाना कैसा है?

जवाबः– मोमिन के अमाल का दारो मदार नियतों पर है बुख़ारी शरीफ़ जिल्द अव्वल की पहली हदीस है اِنَّمَا الاَ عْمَالُ بِالنِّيَاتِ وانما لِامْرِءٍ مَّا نَوَا यानी अमल के सवाबो जज़ा का ताल्लुक़ नियतों से है जैसी नियत होगी वैसी जज़ा मिलेगी अगर नियत महमूद और बेहतर है तो सवाबो जज़ा भी बेहतर

और अगर नियत ख़राब तो जज़ा भी उसी के ऐतबार से अशरए मुहर्रमुल हराम में मुसलमान जो ढोल ताशा और डंका नक़्क़ारा बजाते हैं उनकी ग़ालिबन नियत इत्तेला जुलूसे अलम और आमदे ताज़िया का एलान होता है अगर वाक़ई यही नियत है तो महमूद है।

ग़ौसुल आलम हज़रत सुल्तानुत्तारिकीन सैयद मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर समनानी ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं " तबल यानी ढोल की दो क़िसमें हैं एक वह जो लहवो लइब के लिए बजाया जाता है लहव हराम है और तबल ममनूअ लेकिन जो तबल (ढोल नक़्क़ारा) लड़ाई के वक़्त या फ़ौज के कूच के वक़्त बजाया जाए वह मशरूअ है जाइज़ है।हज़रत इब्राहीम ख़लील उल्लाह के मज़ारे मुबारक पर इस वक़्त तक यह क़ायदा है कि खाना तक़सीम होने के वक़्त तबल (ढोल, नक़्क़ारा) बजाया जाता है ताकि सब मुसाफ़िरों और मुजाविरों को इत्तिला हो जाए और हर शख़्स अपना हिस्सा ले जाए बाज़ मशाएख़ कूच और नुज़ूल के वक़्त तबल बजाते हैं।हज़रत शेख़ अबू इस्हाक़ गाज़रूनी के रौज़ह मुबारक पर खाने के तक़्सीम के वक़्त तबल बजाया जाता है और वहाँ के मुजाविरों ने सैयद अशरफ़ को भी तबल और अलम की इजाज़त दी थी। फ़ुक़रा का खाना इबादत है और जो फ़ेल इबादत की दावत करे वह मशरू जाइज़ है लिहाज़ा खाने के वक़्त तबल बजाना जाएज़ है।(लताएफ़े अशरफ़ी हिस्सा दोम सफ़ह 245)

ख़ानक़ाहे आलिया बदीईया मदारिया मकनपुर शरीफ़ में उर्स के मौक़े से जब कश्ती शरीफ़ की आमद होती है और सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे आलिया तख़्त नशीन होने को होते हैं तो सहने दम्माल शरीफ़ में नक़्क़ार्ची नक़्क़ारा बजाता है और दम्माल शरीफ़ के पूरे शग़्ल में नक़्क़ारए इस्लाम बजता रहता है । माही मरातिब डंका निशान सिलसिलए मदारिया की हर ख़ानक़ाह में आज भी बतौर अलामत महफ़ूज़ हैं। नक़्क़ार्ची का वज़ीफ़ा ख़ानक़ाह शरीफ़ की तरफ़ से बन्धा हुआ है। इसी तरह सैयदना सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी ﷺ के आस्तानए आलिया पर यकुम रजब को उर्स का एलान बज़रिए ढोल ताशा होता है और ढोल ताशा ही बजाया जाता है । तमाम

दुनिया का मुसलमान इस एलान को तक़रीबन आठ सौ साल से सुन रहा है।देख रहा है।हुज़ूर सैयदना मख़्दूम अला उद्दीन साबिर कलियरी ﷺ के यहाँ भी एलाने उर्स ढोल ताशे से ही होता है।जो आज भी जारी सारी है।(ताज़िया शरीफ़ का शरई हुक्म सफ़ह 32–33)सच तो यह है कि एशियाए कूचक की हर क़दीम ख़ानक़ाह में और शाहाने इस्लाम के यहाँ यह रस्म रवा और राइज है ।

**फ़ुक़हाए इस्लाम के नज़्दीक ढोल ताशे का हुक्म** : फ़ुक़हाए इस्लाम ने भी बाज़ कुयूद व शराएत के साथ नौबत व नक़्क़ारा और ढोल ताशे को जाएज़ करार दिया है । एलान और दीगर मक़ासिदे महमूदा के लिए ढोल ताशा बजाने के बारे में फ़ुक़हाए किराम ने कई मुक़ामात पर मसाइलो अहकाम क़लमबन्द फ़रमाया है ।

बहारे शरीअत में हज़रत मौलाना मोहम्मद अमजद अली साहब फ़रमाते हैं नौबत बजाना अगर तफ़ाख़ुर के लिए हो तो नाजाइज़ है और अगर लोगों को उस से मुतनबबह बेदार करना मक़सूद हो, नफ़ख़ाते सूर याद दिलाने के लिए हो तो तीन वक़्तों में नौबत बजाने की इजाज़त है । बाद अस्र और बाद इशा और बाद निस्फ़ शब कि इन औक़ात में नौबत को नफ़ख़े सूर से मुशाबेहत है (दुर्रे मुख़्तार) यह नियत बहुत अच्छी है।अगर नौबत बजाने वाले को भी इसका ध्यान हो और काश सुन्ने वाले को भी नौबत की आवाज़ सुन कर नफ़ख़ाते सूर याद आयें।मगर इस ज़माने में ऐसे लोग कहाँ यहाँ तो नौबत से मक़सूद धूम धाम और शादी ब्याह की ज़ेबो ज़ीनतहै (बहारे शरीअत हिस्सा 16 सफ़ह 130 मतबूआ फ़ारूक़िया बुक डिपो दिल्ली)

**मसअला** :- ईद के दिन और शादियों में दफ़ बजाना जाएज़ है जबकि सादे दफ़ हों उस में झांझ न हों और क़वाइदे मौसीक़ी पर न बजाए जायें यानी महज़ ढब ढब की बे सुरी आवाज़ से निकाह का एलान मक़सूद है ।

(दुर्रुल मुख़्तार, आलमगीरी, बहारे शरीअत हिस्सा 16 सफ़ह 130)

**मसअला** :- लोगों को बेदार करने और ख़बरदार करने के इरादे से बिगुल बजाना जाएज़ है जैसे हमाम में बिगुल इस लिए बजाते हैं कि लोगों को इत्तेला हो जाए कि हम्माम खुल गया है । रमज़ान शरीफ़ में सहरी खाने के वक़्त

बाज़ शहरों में नक़्क़ारे बजते हैं जिनसे ये मक़सूद होता है कि लोग सहरी खाने के लिए बेदार हो जायें और उन्हें मालूम हो जाए कि अभी सहरी का वक़्त बाक़ी है । कि यह सूरत लहवो लइब में दाख़िल नहीं।(दुर्रे मुख़्तार) इसी तरह कारख़ानों में काम शुरू होने के वक़्त और ख़त्म के वक़्त सीटी बजा करती है यह जाएज़ है कि लहव खेल मक़सूद नहीं बल्कि इत्तेला देने के लिए यह सीटी बजाई जाती है इसी तरह रेल गाड़ी की सीटी से भी मक़सूद यही होता है कि लोगों को मालूम हो जाए कि गाड़ी छूट रही है या इसी क़िस्म के दूसरे सही मक़सद के लिए सीटी दी जाती है यह भी जाएज़ है।(बहारे शरीअत हिस्सा 16 सफ़ह 130 मतबूआ फ़ारूक़िया बुक डिपो दिल्ली) ग़रज़ यह कि अगर मक़सद और नियत सही है तो नौबत, ढोल, दफ़, नक़्क़ारा और सीटी बजाना जाएज़ है और अगर मक़सद ख़राब है नियत लहवो लइब की है तो नाजाएज़ है । तश्हीरे हुसैनियत, यज़ीदियत के गन्दे कारनामों का उजागर करना और एलाने जुलूस अलम व ताज़िया शरीफ़ करना मक़सदे हसन और नियत महमूदा है इस लिए अशरए मुहर्रम में या बाद अशरा ब नियते हसना ढोल, ताशा, नौबत, नक़्क़ारा बग़ैर सुरो साज़ के बजाना जाएज़ है।

**उलमाए देवबन्द के नज़्दीक ढोल ताशा** : अज़ानो इक़ामत के दर्मियान जो तसवीब कहते हैं यानी अज़ान जो एक एलाने नमाज़ है उस एलान के बाद एक और एलान जो तसवीब के नाम से मशहूर है उसके बारे में उलमाए देवबन्द लिखते हैं अस्ल इस बाब में यह है कि अज़ान और नमाज़ के दर्मियान लोगों को नमाज़ के लिए बुलाना और जमा करना(किसी मुतार्रिफ़ तरीक़े के ज़रिए से)मशाइख़ और अइम्मा ने बज़रूरत जाएज़ बल्कि मुसतहसन क़रार दिया है जिसको इस्तेलाह में तसवीब कहते हैं क्यूँ कि मुसलमानों में रोज़अफ़ज़ूँ ग़फ़्लत उसकी मुक़तज़ी है क बार बार तम्बीह की जाए और उस तम्बीह के लिए मशाएख़े ने कोई ख़ास तरीक़ा मुक़र्रर नहीं फ़रमाया हर ज़माने और हर जगह के उर्फ़ पर छोड़ा है कि जो चीज़ लोगों में मुतार्रिफ़ हो जाए वही हर जगह अमल में लाई जाए और बेऐनेहि ऐसा है जैसे रमज़ानुल मुबारक में इब्तिदा व इन्तिहाए सहर के लिए हर शहर व क़स्बे

में अपने उर्फ़ के मुवाफ़िक़ मुख़्तलिफ़ सूरतें इख़्तियार की जाती हैं कहीं घण्टा बजाते हैं कहीं नक़्क़ारा व तबल कहीं गोला व तोप छोड़ी जाती है और उमूमन फ़ुक़हा ने इसको जाएज़ व मुसतहसन क़रार दिया है। .

(फ़तावा दारुल उलूम देवबन्द जिल्द अव्वल व दोम सफ़ह 70)

बहारे शरीअत में हज़रत मौलाना मुहम्मद अमजद अली साहब तहरीर फ़रमाते हैं''नौबत बजाना अगर तफ़ाख़ुर के लिए हो तो नाजाएज़ है और लोगों को उस से तम्बीह करना मक़सूद हो, नफ़ख़ाते सूरया याद दिलाने के लिए हो तो जाएज़ है ।

## एलान के लिए दफ़ बजाना हदीस शरीफ़ से साबित है

**हदीस शरीफ़** :हज़रत सैयदा उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दिक़ा ﵂ से मरवी है उन्हों ने फ़रमाया कि रसूलल्लाह ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं ।

اَعَلِنُوا هٰذا النِكاح وَ اجُعَلُوهُ فی الُمَسَا جِدِ وَ اضُرَ بُو ا عَلَيُهِ بالدفوف

तर्जुमा :-निकाह का एलान किया करो और मस्जिदों में निकाह किया करोइस मौक़े पर दफ़ों को बजाया करो । (मिश्कात जुज़ 2 सफ़ह 272– तिरमिज़ी जिल्द सानी बाबुन्निकाह)

मिश्क़ात की शरह मिरक़ात में मुल्ला अली क़ारी तहरीर फ़रमाते हैं

لکن خارج المسجد قال الفقهاء المراد به لا جلا جل له ١٢واضربوا عليه باالدفوف

मिरक़ात हाशिया मिश्कात सफ़ह 272 यानी इस मौक़े पर दफ़ों को मस्जिद से बाहर ही बजाओ और फ़ुक़हाए इस्लाम फ़रमाते हैं कि दफ़ों में झांझ नहीं होना चाहिए ।

**हदीस** :- عن محمد ابن حاطب الجمعی عن النبی ﷺ قال فَصُلُ مابین الحلال و الحرا م الصوت و الدف فی النکا ح

रवाह अहमद वत्तिरमिज़ी व इब्ने माजह वन्निसाई मिश्कात सफ़ह 272 एक दूसरी हदीस में हज़रत मुहम्मद बिन हातिबअल जमई ﵁ से मरवी है उन्हों ने फ़रमाया कि रसूलल्लाह ﷺ का इरशाद है कि हलाल और हराम निकाह में फ़र्क़ दफ़ बजाने और आवाज़ लगाने से होता है यानी निकाह हलाल का एलान दफ़ बजाकर किया जाता है और निकाह हराम चुपके चुपके कर दिया जाता है । (निसाई शरीफ़)

इन दोनों हदीसों से वाज़ेह हो गया कि एलान के लिए दफ़ बजाना हुक्मे रसूल है दफ़, तबला, नक़्क़ारा, ढोल ये तमाम के तमाम नेक मक़सद और एलान के लिए इस्तेमाल हो सकते हैं अशरए मुहर्रम में इमाम हुसैन ﵇ और जुमला शोहदाए करबला व अहले बैते रसूल की क़ुर्बानियों और उनके ईसारो जज़्बात फ़िदा कारी के एलान के लिए इन चीज़ों का इस्तेमाल अगर मुसलमान करें तो बिला शुबह जाएज़ व बाइसे अज्र होना ही चाहिए । वल्लाह आलम बिस्सवाब ।

# सलाम ब दरगाहे शोहदाए करबला

नबी के ख़ून की तासीर को सलाम करो
तबस्सुमे लबे बेशीर को सलाम करो
जो देखना हो कि मिलती है किस तरह जन्नत
तो हुर की ख़ूबिये तक़दीर को सलाम करो
अमीने कारे इमामत हैं ऐ जहाँ वालो
अदब से ज़ैनबे दिलगीर को सलाम करो
वही अदा वही जलवे ज़े फ़र्क़ ता ब क़दम
नबी की हू ब हू तसवीर को सलाम करो
वो जिसने आबिदे बेपर के पॉव चूमें थे
असीरो तुम उसी ज़ंजीर को सलाम करो
हसन ब सूरते क़ासिम रज़ा के तालिब हैं
हुसैन साहिबे तहरीर को सलाम करो
अजब नहीं कि धुलें पल में दाग़ इसियाँ के
बिनाए आ य ए ततहीर को सलाम करो
रगों में दीं की उन्हीं का लहू मचलता है
नबी के ख़्वाब की ताबीर को सलाम करो
ये उम्र और ये लाशा जवान बेटे का
अदीब हिम्मते शब्बीर को सलाम करो

अज़ अल्लामा अदीब मकनपुरी